जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – अप्रैल 2023 ।। अंक – 33 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

लहठी व्यवसाय से
स्वीटी को मिली नई पहचान
(पृष्ठ – 02)

स्वरोजगार से अनीता के
जीवन में आई खुशहाली
(पृष्ठ – 03)

महिला उद्यमिता को मिल रही नई पहचान
जे–वायर्स से खुला
स्वरोजगार का नया द्वार
(पृष्ठ – 04)

जीविका महिला कृषि उत्पादक कम्पनी लिमिटेड

सात नदियों से घिरे होने के कारण खगड़िया बाढ़ से प्रभावित जिला है। बाढ़ के कारण खगड़िया न्यूनतम प्राकृतिक संसाधनों के साथ बिहार के सबसे कम विकसित जिलों में से एक है। यहां की प्रमुख खेती मक्का है जो जिले में बहुतायत से उपजाया जाता है। इसके साथ गेहूं, मूंग, सोयाबीन, धान और मेंथा का स्थान आता है। खगड़िया में मक्का और धान उत्पादन की क्षमता को देखते हुए जीविका महिला कृषि उत्पादक कंपनी लिमिटेड ने मक्का के लिए निवेश, आपूर्ति, एकत्रीकरण, खरीद, भंडारण और बिक्री के क्षेत्र में कार्य करने के लिए चुना।

जीविका महिला कृषि उत्पादक कंपनी लिमिटेड की शुरूआत वर्ष 2009 में छोटे और सीमांत किसानों को उनके उत्पादन को उचित मूल्य पर बाज़ार उपलब्ध करा कर रोजगार में सहायता प्रदान करने के उद्धेश्य से की गयी। कंपनी की शेयरधारक विभिन्न प्रखंडों के छोटे और सीमांत महिला किसान हैं जो जीविका से जुडी हैं। वर्त्तमान में खगड़िया में 41 जीविका उत्पादक समूह कार्यरत हैं, जिसमें 3000 से अधिक सदस्य हैं, जो मासिक आधार पर नियमित बैठक करते हैं तथा खेती के नए और वैज्ञानिक तरीकों को अपनाकर अपने जीवन को बेहतर बनाने का प्रयास करते हैं।

वर्त्तमान में जीविका महिला कृषि उत्पादक कंपनी जिले के सभी प्रखंडों में गठित किसान उत्पादक समूहों के माध्यम से किसानों और उनके कृषि उपज मक्का पर काम कर रही है। कंपनी ने वर्ष 2021 से 2023 में किसानों तथा बाज़ार के बीच की कड़ी बन के धान, गेहूं और केला को शामिल करके अपने पोर्टफोलियो को और व्यापक किया है। निवेश के लिए कंपनी सेवा शुल्क मॉडल पर कृषि उद्यमियों और जीविका के सामुदायिक संगठनों पर निर्भर करती है। कंपनी ने निवेश एवं आपूर्ति के लिए अपना खुद का विक्रय केंद्र भी खोल लिया है। इसमें किसानों को वन स्टॉप समाधान प्रदान करने के लिए जीविका महिला कृषि उत्पादक कंपनी को उर्वरक लाइसेंस भी मिला है। कंपनी जिले के सभी प्रखंडों में बिक्री केंद्र खोलने की योजना पर भी काम कर रही है। जीविका महिला कृषि उत्पादक कंपनी अपने किसानों को गोदाम की भी सुविधाएँ प्रदान करती है।

उद्देश्य

- कंपनी से जुडी महिला किसानों के लिए खेतीबाड़ी के लगभग सभी कृषि यन्त्र और उससे सम्बंधित वस्तुओं और उनके प्रसंस्कृत उत्पाद और परामर्श, खरीद, भंडारण, प्रसंस्करण, पैकेजिंग, वितरण, बिक्री और व्यापार में मदद करना।
- बाजार तक बेहतर पहुंच सुनिश्चित करके छोटे और सीमांत किसानों की आय में वृद्धि करना।
- बाजार तक पहुंच पर उत्पादक कंपनी और संकुल संघ जैसे समुदाय आधारित संस्थानों की क्षमता का निर्माण कर उसे लाभान्वित करना।
- राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों के अनुसार सभी प्रकार के जैविक कृषि और बागवानी फसलों के जैविक उत्पादन कार्यक्रम अंतर्गत निर्यात, व्यापार एवं व्यवसाय में किसानों बढ़ावा देना।
- बीज उत्पादन।
- कृषि–वस्तुओं में मूल्यवर्धन।
- किसानों को गुणवत्तापूर्ण एवं सही मूल्य प्राप्ति के लिए बिक्री बाज़ार उपलब्ध करा कर राष्ट्रीय स्तर पर लाभ दिलाना।
- व्यापार के लिए तकनीकी क्षमता बढ़ाने हेतु एमएससी टीम के साथ सहयोग।

वर्ष 2017 में कंपनी को नई दिल्ली में एनसीडीईएक्स द्वारा 'कृषि प्रगति पुरस्कार' भी प्राप्त हुआ है। कई संगठनों जैसे–माइक्रोसेव, एसआरएलएम अरुणाचल प्रदेश, टाटा ट्रस्ट (ट्रस्ट लाइवलीहुड), आगा खान फाउंडेशन को एक्सपोजर विजिट के लिए मंच प्रदान किया। 2018 में कंपनी ने दिल्ली में एनसीडीईएक्स द्वारा आयोजित मूल्य श्रृंखला विकास सम्मेलन में भाग लिया। यही नहीं, कंपनी ने भागलपुर जिले के पीरपैंती प्रखंड में आम की वैल्यू चैन के लिए अपने दायरे का भी विस्तार किया। भागलपुर के जगदीशपुर प्रखंड में कतरनी धान की खरीद कर उससे बने कतरनी चुडा एवं चावल की बिक्री भी किया गया। इस प्रकार जीविका महिला कृषि उत्पादक कम्पनी खगड़िया के छोटे एवं सीमान्त महिला किसानों के लिए वरदान साबित हो रही है। वर्ष 2018 में खगड़िया जिले की अमृता दीदी जो जीविका महिला कृषि उत्पादक कंपनी लिमिटेड की कोषाध्यक्ष हैं बिहार का प्रतिनिधित्व करते हुए माननीय प्रधानमंत्री से सीधे वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से संवाद स्थापित कर मक्का व्यवसाय पर चर्चा की थी।

लहठी व्यवसाय से स्वीटी को मिली नई पहचान

बेगूसराय जिला के मटिहानी प्रखंड के मटिहानी–1 पंचायत की स्वीटी की शादी महज 14 वर्ष में उस समय कर दी गयी जब वह आठवीं की छात्रा थीं। शादी के बाद भी स्वीटी का जज्बा और हिम्मत में कमी नहीं आई और उन्होंने स्नातक तक की पढ़ाई की। उनके पति खेती और पशुपालन का कार्य किया करते थे लेकिन उनकी आमदनी परिवार की जरूरतों के लिए पर्याप्त नहीं थी। आर्थिक कठिनाईयों के कारण स्वीटी एवं उनके परिवार को निरंतर कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था।

स्वीटी 2019 में जीविका से जुड़ी और विभिन्न गतिविधियों में भाग लेना शुरू किया। आवश्यकतानुसार व्यवसाय एवं अन्य कार्यों के लिए उन्होंने जीविका से कर्ज लिया। कर्ज का बेहतर उपयोग के साथ ही उन्होंने इसे ससमय वापस भी कर दिया। इसी बीच जीविका से कर्ज लेकर स्वीटी ने लहठी बनाने का कार्य प्रारंभ किया। लहठी बनाने के प्रशिक्षण के बाद उन्होंने अपने घर पर ही लहठी बनाने का कार्य शुरू किया। इस कार्य में पहले पति–पत्नी जुड़े लेकिन समय के साथ जब उनका कारोबार बढ़ने लगा तो उन्होंने स्थानीय कुछ लोगों को अपने साथ जोड़ लिया। आज इनके द्वारा निर्मित लहठी की मांग बेगूसराय के हर दुकान में है। सरस मेला, बिहार दिवस, जिला स्थापना दिवस आदि मौकों पर भी स्वीटी अपनी लहठी की बिक्री करती हैं। उन्हें अपने लहठी के व्यवसाय से महीने में 10 से 15 हजार की कमाई हो जाती है।

स्वीटी बताती हैं कि–'जीविका की मदद से लहठी निर्माण एवं विपणन का व्यवसाय प्रारंभ किया। शुरूआती समय में थोड़ी कठिनाई आई लेकिन धीरे–धीरे हर प्रकार की व्यवसायिक समझ मुझमें आ गयी। आज इसी का परिणाम है कि मेरा व्यवसाय सही तरीके से संचालित है और मेरी आर्थिक स्थिति में काफी सुधार हुआ है। अपने उद्यम के कारण मेरी नई पहचान बनी है।' स्वीटी अपनी आमदनी से बचत कर अपने व्यवसाय और आगे बढ़ाना चाहती हैं।

ग्रामीण उद्यमिता से आई आर्थिक आत्मनिर्भरता

भागलपुर जिला के खरीक प्रखंड अन्तर्गत धुवगंज पंचायत के मिर्जाफरी गांव की रहने वाली मंजू देवी ने एक सामान्य गृहणी की अपनी छवि को पीछे छोड़कर एक सफल मसाला उद्यमी के रूप में अपनी नई पहचान बना ली है। मंजू देवी ने स्टार्ट–अप ग्राम उद्यमिता कार्यक्रम (एस.वी.ई.पी.) योजना का लाभ लेते हुए मसाला उत्पादन एवं बिक्री का व्यवसाय शुरू किया है। लोगों को अपने गांव में ही रोजगार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से शुरू की गई एस.वी.ई.पी. योजना का लाभ लेते हुए मंजू देवी 'मंजू मसाला भंडार' के नाम से उद्यम चला रही हैं। अपने इस उद्यम में वह विभिन्न प्रकार के मसालों का उत्पादन एवं बिक्री का कार्य करती हैं।

एस.वी.ई.पी. योजना से जुड़ने के पहले वह केवल आटा–सत्तू की पिसाई का काम करती थी। इससे होने वाली मामूली आय से मंजू देवी के लिए अपने घर–परिवार की जरूरतों को पूरा करना असंभव था। ऐसे में वह अपने इस व्यवसाय का विस्तार करना चाहती थी। इसी बीच उन्हें एस.वी.ई.पी. योजना से जोड़ा गया। इसके बाद एस.वी.ई.पी. योजना के तहत उन्हें 40 हजार रुपये ऋण प्राप्त हुआ। शेष राशि की व्यवस्था उन्होंने स्वयं की। इस प्रकार कुल 68 हजार रुपये की पूंजी के साथ उन्होंने मसाला भंडार का उद्यम प्रारंभ किया। अब वह मसाले की प्रसंस्करण एवं इसकी बिक्री का काम करने लगी है। मसाले के रूप में वह धनिया, हल्दी, जीरा, काली मिर्च, लाल मिर्च आदि की पिसाई कर उसका पाउडर तैयार करती हैं। इसके बाद पैकेजिंग कर उसे बाजार में बेचती है। साल भर में वह तकरीबन 3 लाख रुपये मूल्य के मसाले की बिक्री कर लेती हैं, जबकि उन्हें 1 लाख से अधिक की वार्षिक आय हो जाती है। एस.वी.ई.पी. योजना की बदौलत नया उद्यम संचालित करने वाली मंजू देवी के परिवार ने गरीबी को मात देकर आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ाया है।

स्वरोजगार से अनीता के जीवन में आई खुशहाली

जीविका दीदियाँ स्वरोजगार के नित नए आयामों से खुद को आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तीकरण की राह पर लाई हैं। लखीसराय जिला स्थित हलसी प्रखंड अंतर्गत रघुनन्दन विगहा की अनीता देवी पारंपरिक स्वरोजगार से इतर पौधों की नर्सरी चला रही हैं। विष्णु जीविका महिला स्वयं सहायता समूह की सदस्य अनीता देवी जीविका से जुड़ाव के बाद विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन के संचालन में अहम् भूमिका के साथ ही पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग अंतर्गत मुख्यमंत्री निजी पौधशाला (अन्य प्रजाति) योजना को अपने जीवन का आधार बना लिया है। योजना के अंतर्गत अनीता देवी अपने गाँव में ही सोलह कट्ठा के प्लाट में नर्सरी चला रही हैं। नर्सरी को 'दीदी की पौधशाला' के नाम से जाना जाता है। नर्सरी में लगभग 15 प्रजाति के फलदार एवं काष्ठीय पौधों का बीजारोपण करती हैं। पौधों के डेढ़ से दो फीट होने के बाद वन विभाग एवं मनरेगा को उनके मांग के अनुरूप आपूर्ति की जाती है। नर्सरी से इन्हें प्रति वर्ष लगभग तीन लाख रुपये का शुद्ध मुनाफा हो रहा है। इसके साथ ही अनीता देवी अपने घर के बाहरी परिसर में जैविक खाद का भी उत्पादन पिछले तीन साल से कर रही हैं। जैविक खाद के तहत वर्मी कम्पोस्ट, ब्रह्मास्त्र, निमास्त्र एवं अग्निास्त्र खाद का उत्पादन करती हैं। इनके द्वारा उत्पादित खादों की बिक्री कृषि विज्ञानं केंद्र, वन विभाग, जीविका दीदी की नर्सरी के साथ ही किसानों के बीच होती है। खाद उत्पादन की प्रक्रिया का प्रशिक्षण अनीता देवी ने जीविका के सहयोग से कृषि विज्ञान केंद्र से लिया है। अनीता देवी पर्यावरण संरक्षण में अपना योगदान दे रही हैं। नर्सरी से उन्हें आर्थिक संबल तो मिला ही है जीवन में खुशहाली भी आई है। बच्चे भी स्कुल में पढाई के साथ नर्सरी में भी अपना योगदान देते हैं।

प्रमिला दीदी ने स्वरोजगार से मजदूर पति का पलायन रोका

दिघलबैंक प्रखंड के आठ्गाछी पंचायत की रहने वाली प्रमिला देवी, पहले मजदूरी करती थीं। मजदूरी से घर चलाना मुश्किल हो रहा था। घर की जरूरतों को पूरा करने के लिए वे कर्ज पर आश्रित रहने लगी। कर्ज को खत्म करने के लिए पति भी बिहार से बाहर मजदूरी करने को विवश हो गए। दीदी बताती हैं कि–'पति के बाहर रहने से उन्हें अकेले घर–गृहस्थी चलाने में दिक्कत होती थी। इन्हीं संघर्षों के बीच उन्हें एक दिन जीविका के बारे में पता चला। वर्ष 2017 में वे जीविका से जुड़ी। वह आगे कहती हैं कि समूह से 30 हजार रुपये ऋण लेकर गाँव में किराना का दुकान खोला। दुकान से हुई आमदनी से उन्होंने ससमय ऋण वापस कर दिया। फिर, जीविका के माध्यम से 30 हजार बैंक ऋण लेकर किराना दुकान के साथ–साथ मनिहारा दुकान भी शुरू किया। इन सब काम से उन्हें प्रतिदिन 1000 से 1500 रुपये की आमदनी हो जाती है। उनके काम में पति भी हाथ बंटाने लगे। इससे उनका पलायन भी रूक गया। दीदी बताती हैं कि जीविका से जुड़कर खुद को आर्थिक तौर पर मजबूत बनाने में मदद मिली। पहले हम मजदूरी करते थे। कर्ज में डूबे थे, अब अच्छे से जीवनयापन कर रहे हैं। दीदी अपने तीन बच्चों को पढ़ा रही हैं। खुद के साथ–साथ प्रमिला दीदी अन्य दीदियों को भी जीविका से जोड़कर आगे बढ़ने में मदद कर रही हैं। कम्युनिटी रिसोर्स पर्सन के रूप में उन्होंने ग्राम संगठन के माध्यम से सरकार द्वारा चलाए जा रहे सतत जीविकोपार्जन योजना से 33 अत्यंत गरीब दीदियों को चयन कर उन्हें समाज की मुख्यधारा में जोड़ने का कार्य किया है।

महिला उद्यमिता को मिल रही नई पहचान, जे–वायर्स से खुला स्वरोजगार का नया द्वार

बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति द्वारा सम्पोषित जीविका सामुदायिक संगठनों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओँ को विभिन्न गतिविधियों से जोड़ कर सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में लगातार प्रयास किया जा रहा है। गया जिले के डोभी प्रखंड में स्थित जीविका वीमेन इनिशिएटिव रिन्यूएबल एनर्जी एंड सॉल्यूशन (जे–वायर्स) इसी तरह का एक नवाचार है।

महिला उद्यमिता की पहचान करते हुए जनवरी 2020 में जे–वायर्स को एक सामुदायिक स्वामित्व वाली प्राइवेट लिमिटेड कंपनी के रूप में बिहार के गया जिले के डोभी प्रखंड में स्थापित किया गया है। जे–वायर्स एक निर्माता, असेंबलर, व्यापारी और सिस्टम इंटीग्रेटर कंपनी है जो इलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रॉनिक्स और सौर उत्पाद की गतिविधियों में काम करती है। वर्त्तमान में 60 जीविका स्वयं सहयता समूह से जुड़ी महिलाएं इसमें शेयर होल्डर है जिसकी संख्या 200 तक की जा सकती है। इनमें 25 जीविका दीदियाँ प्रशिक्षण के बाद तकनीकी सहायक के रूप एलईडी बल्ब असेम्बलिंग के कार्य करती हैं। जे–वायर्स के संचाल हेतु 15 कर्मियों को रखा गया है।

जे–वायर्स का उद्देश्य बिहार में सौर पारिस्थितिकी तंत्र बनाना है जिससे सामुदायिक संगठन से जुड़ी जीविका दीदियों को स्थानीय स्तर पर व्यक्तिगत सोलर शॉप के माध्यम से आजीविका का अवसर प्राप्त हो सके। साथ ही उनमें उद्यमशीलता का विकास हो सके। सरकारी परियोजना, निजी एवं सामुदायिक भागीदारी द्वारा लागत प्रभावी समाधान और सुनिश्चित सेवा प्रदान किया जा सके। जे–वायर्स अनुसंधान परियोजना और ऊर्जा आवश्यकता हेतु मूल्यांकन के लिए डीपीआर के साथ–साथ तकनीकी स्तर पर उन्नत प्रशिक्षण की दिशा में कार्य कर रहा है।

जे–वायर्स के माध्यम से बिहार के 5 जिलों 'गया, नवादा, औरंगाबाद, पश्चिम चंपारण और भोजपुर' के 57 प्रखंडों में जीविका दीदियों द्वारा 341 दुकानें चलाई जा रही हैं। इनमें सौर ऊर्जा, इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक कई प्रकार के उत्पादों की बिक्री के साथ कोई खराबी आने की स्थिति में रिपयेरिंग की सुविधा उपलब्ध है। 341 सौर दुकानों में 192 में एयरटेल पेमेंट बैंक सीएसपी (ई–सेवाएं) की सुविधा भी उपलब्ध है। जीविका दीदियों को इन दुकानों के संचालन से जीविकोपार्जन का एक नया साधन मिला है।
जे–वायर्स अपने खुद के ब्रांड एलईडी बल्ब की निर्माता है। यह सेल्फ ब्लास्ट एलईडी लाइटिंग के लिए एमएसएमई और बीआईएस सर्टिफिकेट जैसे सभी आवश्यक सरकारी प्रमाणन को भी पूरा करती है। जीविका टेरी, आईआईटीबी, ईईएसएल, काउंसिल ऑन एनर्जी, इनवायरमेंट एंड वाटर और कई अन्य के साथ भी साझेदारी की है।

जीविका वीमेन इनिशिएटिव रिन्यूएबल एनर्जी एंड सॉल्यूशन के द्वारा सौर ऊर्जा की आवश्यकता के आकलन के अनुरूप कार्य करती है। महिलाओं द्वारा जे–वायर्स ब्रांड के तहत बनाये जा रहे एलईडी बल्ब गुणवत्ता की दृष्टि बेहतर होने के साथ मूल्य की दृष्टि से भी बाजार प्रतियोगी है। ऑक्सफैम इंडिया परियोजना के तहत नालंदा जिले में सोलर स्ट्रीट लाइट लगाई गई हैं। गया में टेरी के सहयोग से 750 घरों में सब्सिडी दर पर एकीकृत घरेलू ऊर्जा प्रणाली जिसमें 80 प्रतिशत कम धुआँ उत्सर्जित करने वाला चूल्हा के साथ प्रकाश हेतु एलइडी बल्ब जुड़ा होता है, लगाया गया है। महिला उद्यमिता को बढ़ाते हुए इस वित्तीय वर्ष में सौर दुकानों की संख्या 650 तक किये जाने का लक्ष्य रखा गया है। जीविका दीदियों को जे–वायर्स के माध्यम उद्यमिता विकास के साथ सौर ऊर्जा उपकरण के दुकानों से स्वरोजगार का अवसर मिला है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, बेगूसराय
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, सिवान
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार